"निरमल"

• निरमल भगती है निराली । मन तन धोवहि सबदि वीचारी । अनदिन सदा रहै रंगि राता करि किरपा भगति कराइदा ।

(3-1059-1060)

अर्थः- हे भाई ! परमात्मा की भक्ति जीवन को पवित्र करने वाली एक अनोखी दाति है । गुरु के शब्द में जुड़ के भक्ति के अमृत के साथ जो मनुष्य अपना मन और तन धोते हैं, वे सुंदर विचार के मालिक बन जाते हैं । इस भक्ति के द्वारा मनुष्य हर वक्त सदा ही परमात्मा के प्रेम - रंग में रंगा

रह सकता है । पर यह उसकी मेहर ही है परमात्मा कृपा करके स्वयं ही जीव से अपनी भक्ति करवाता है ।

• सतिगुर की सेवा निरमली निरमल जन होई सु सेवा घाले । जिन अन्दरि कपट विकार झुठ ओए आपे सचै वखि कढे जजमाले ।

अर्थः- सतिगुरु की बताई सेवा एक पवित्र कर्म है, जो मनुष्य निर्मल हो भाव, जिस मनुष्य का हृदय मलीन ना हो वही ये मुश्किल कार कर सकता है । जिनके हृदय में धोखा - विकार और झूठ है, सच्चे प्रभु ने खुद ही उन कड़वों को गुरु से अलग कर दिया है ।

सचिआर सिख बहि सतिगुर पासि घालनि कूड़िआर न लभनी कितै थाई भाले ।

अर्थः- सत्य के व्यापारी सिख तो सतिगुरु के पास बैठ के सेवा की मेहनत करते हैं, पर वहाँ झूठ के व्यापारी ढूँढने से भी नहीं मिलते ।

जिना सतिगुर का आखिआ सुखावै नाही तिना मुंह भलेरे फिरहि दसि गाले । जिना अंदरि प्रीति नही हरि केरी से किचरक वेराईअनि मनमुख बेताले ।

अर्थः- जिन मनुष्यों को सतिगुरु के वचन अच्छे नहीं लगते उनके मुँह भ्रष्ट हुए हुये हैं, वे प्रभु पति द्वारा धिक्कारे फिरते हैं । जिनके हृदय में प्रभु का प्यार नहीं, उन्हें कब तक धीरज दिया जा सकता है ? वह मन के मुरीद लोग भूतों की तरह ही भटकते हैं ।

सतिगुर नो मिलै सु आपाणा मन थाइ रखै ओहि आपि वरतै आपणी वथ नाले । जन नानक इकना गुर मेलि सुख देवै इकि आपे वखि कढै ठगवाले ।1।

अर्थः- जो मनुष्य सतिगुरु को मिलता है वह एक तो अपने मन को विकारों से बचा के ठिकाने रखता है, साथ ही अपनी वस्तु को वह स्वयं ही इस्तेमाल करता है भाव, कामादिक वैरी उसके आनंद को खराब नहीं कर सकते पर हे दास नानक ! जीव के हाथ में कुछ नहीं एक को खुद हरि मिलाता है और सुख बख्शता है और एक ठगी करने वालों को अलग कर देता है भाव, सतिगुरु मिलने नहीं देता ।

जिना अंदरि नाम निधान हरि तिन के काज दयि आदे रासि । तिन चूकी मुहताजी लोकन की हरि प्रभ अंग करि बैठा पासि ।

अर्थः- जिनके हृदय में प्रभु नाम का खजाना है, पति प्रभु ने उनके काम खुद सफल कर दिए हैं उन्हें लोगों की मुहताजी करने की जरूरत नहीं रहती क्योंकि प्रभु उनका पक्ष करके सदा उनके अंग - संग है । मुहताजी तो कहीं रही ।

जां करता वलि ता सभ को वलि सभि दरसन देखि करहि साबासि । साह पातिसाह सभ हरि का कीआ सभि जन कउ आइ करहि रहरासि ।

अर्थः- सब लोग उनका दर्शन करके उनकी उपमा करते हैं क्योंकि जब खुद विधाता उनका पक्ष करता है तो हर किसी ने पक्ष करना हुआ । यहाँ तक कि शाह - पातशाह भी सारे हरि के दास के आगे सिर निवाते हैं क्योंकि वे भी तो सारे प्रभु के ही बनाए हुए हैं प्रभु के दास से आकी कैसे हों ?

गुर पूरे की वडी वडिआई हरि वडा सेवि अतुल सुख पाइआ । गुरि पूरे दान दीआ हरि निहचल नित बखसे चड़ै सवाइआ।

अर्थः- यही महान महिमा पूरे सतिगुरु की ही है कि हरि के दास का शाहों - पातशाहों समेत लोग आदर करते हैं, और वह बड़े हरि की सेवा करके अतुल्य सुख पाता है । पूरे सतिगुरु के द्वारा प्रभु ने जो अपने नाम का दान अपने सेवक को बख्शा है वह समाप्त नहीं होता, क्योंकि, प्रभु सदा बख्शिश किए जाता है और वह दान दिनो - दिन बढ़ता रहता है ।

कोई निंदक वडिआई देखि न सकै सो करतै आपि पचाइआ । जन नानक गुण बोले करते के भगता नो सदा रखदा आइआ ।

अर्थः- जो कोई निंदक ऐसे हरि के दास की महिमा देख के बर्दाश्त नहीं कर सकता, उसे विधाता ने खुद ईर्ष्या की आग में दुखी किया है । मैं दास नानक विधाता के गुण गाता हूँ, वह अपने भक्तों की सदा रक्षा करता आया है ।

तू साहिब अगम दइआल है वड दाता दाणा । तुध जेवड मै होर को दिस न आवई तूहैं सुघड़ मेरै मनि भाणा ।

अर्थः- हे प्रभु ! तू अगम्य पहुँच से परे और दयालु मालिक है, बड़ा दाता और समझदार है मुझे तेरे जितना बड़ा और कोई दिखाई नहीं देता, तू ही सुजान मेरे मन में प्यारा लगा है ।

मोह कुटंब दिस आवदा सभ चलणहारा आवण जाणा । जो बिन सचे होरत चित लाइदे से कूड़िआर कूड़ा तिन माणा ।

अर्थः- जो मोह रूप कुटंब दिखाई देता है सब विनाशवान है और संसार में पैदा होने मरने का कारण बनता है । इस करके सच्चे हरि के बिना जो मनुष्य किसी और के साथ मन जोड़ते हैं वे झूठ के व्यापारी हैं, और उनका इस पर मान झूठा है ।

नानक सच धिआइ तू बिन सचे पचि पचि मुए अजाणा ।

(4-304-305)

अर्थः- हे नानक ! सच्चे प्रभु का स्मरण कर, क्योंकि सच्चे से टूटे हुए मूर्ख जीव दुखी हो के आत्मिक मौत लिए रहते हैं ।

(पाठी माँ साहिबा)

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"